

दहलीज़ के मरुस्थल

सुमित्रा कुमारी रजक

पाखी के पिता ने जब शगुन का गुड़ उसकी हथेली पर रखा था, तब उनके चेहरे पर एक 'विशेष प्रकार' की जीत का संतोष था। बहुत पैसे वाला घर है बिटिया, राज करेगी तू!" पिता के इस वाक्य ने पाखी की भूगोल की उन किताबों को स सम्मान विदा कर दिया, जिनमें वह दुनिया के विस्तार को खोजना चाहती थी। उसे आभास तक न था कि वह एक ऐसे 'स्वर्ण मृग' का पीछा कर रही है, जिसके पीछे का यथार्थ श्मशान की शांति से भी अधिक भयावह होने वाला है। उस 'घर' की भव्यता असल में पाखी के लिए ज्यादा दिनों के लिए सुखद सिद्ध न हुआ। पति, जो बाह्य जगत के लिए शिक्षित और मर्यादित था, घर की चारदीवारी में अपनी माँ के प्रति 'अंध-मोह' की जड़ता का दास था। पाखी के वजूद पर पड़ने वाले प्रहार उसके आत्म-सम्मान को भी लहलुहान करते थे। उसने महसूस किया कि 'प्रतिष्ठित खानदान' का अर्थ अक्सर स्त्री के मौन का उत्सव होता है। दो पुत्रों के जन्म ने पाखी की कोख को तो तृप्त किया, पर उसकी मानसिक स्वायत्तता को शान्ति न दे सका। फिर नियति ने वह पासा फेंका जहाँ 'विज्ञान' हार गया और 'अंधविश्वास' का उन्माद जीत गया। सास की बीमारी के समय वैज्ञानिक चिकित्सा के स्थान पर तांत्रिक अनुष्ठानों और ओझाओं की धूनी को वरीयता दी गई। सास की प्राण-रक्षा तो हो गई, पर उसी गहमागहमी और विवेक शून्यता के बीच पाखी के सुहाग की सांसें उखड़ गईं। अस्पताल ले जाते समय, एम्बुलेंस के सायरन के बीच, तीन माह के नवजात के क्रंदन ने पाखी के सिंदूर को राख में बदलते देखा। किंतु त्रासदी की नियति अभी पूर्ण नहीं हुई थी। सुहाग की तेरहवीं की राख अभी ठंडी भी नहीं हुई थी कि कुदरत ने दूसरा प्रहार किया। मायके की छाँव में, जहाँ वह अपनी व्यथा साझा करने गई थी, उसके ज्येष्ठ पुत्र को तीव्र ज्वर ने ग्रस लिया। नौ महीने के भीतर, पाखी ने अपने 'वर्तमान' (पति) और 'भविष्य' (पुत्र) दोनों की अर्थियाँ उठते देखीं। आज पाखी पुनः उसी घर में है—एक सफेद मौन बनकर। रसोई में रोटियाँ बेलते हुए उसके कानों में सास के 'वाक्-बाण' विष की तरह उतरते हैं— "अभागन है, अपनों को लील गई!" पाखी अब प्रतिवाद नहीं करती। उसकी आँखें अब एक शांत समंदर हैं—गहरी और खारी। वह जानती है कि जिस 'सुरक्षा' की चकाचौंध ने उसके पिता को भ्रमित किया था, उसकी कीमत उसने अपनी अस्मिता की आहुति देकर चुकाई है। अब उसके पास केवल उसकी वह भूगोल की अधूरी किताबें हैं और वह दस महीने का शिशु, जिसके लिए उसे इस मरुस्थल में अपने संघर्ष की नई नदियाँ खोजनी होंगी।...